स्वाध्यायी मन - शिवरतन थानवी

सूर्य प्रकाश जीनगर

शिवरतन जी थानवी बरसों शिक्षक रहे। सामाजिक विवेक की शिक्षा का माहौल बनाने के लिए उन्होनें लम्बा सफर तय किया। पुस्तकों से घनी मित्रता करके उन्होनें अपने घर को लाइब्रेरी में तब्दील कर दिया। शिक्षा विभाग राजस्थान की पत्रिका ''शिविरा'' का नामकरण उन्हीं के द्वारा किया गया था। 13 वर्ष तक शिविरा एवं नया शिक्षक का उन्होनें पूर्णकालिक सम्पादन किया। 1988 में वे शिक्षा संयुक्त निदेशक पद से सेवानिवृत हुए। अपने गांव फलोदी को अपनी कर्म भूमि बनाकर शिक्षा, साहित्य एवं संगीत की दुनिया में रमे रहे।

देश के जाने-माने शिक्षाविद्, प्रखर विचारक-लेखक एवं शिविरा के संस्थापक सम्पादक शिवरतन जी थानवी अपने पैतृक गांव फलोदी में विश्व पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल, 2018 रविवार) को इस नश्वर जगत से अपनी अगली यात्रा के लिए महाप्रयाण कर गए। वे 88 वर्ष के थे। कुछ समय से वे बीमार चल रहे थे। अपनी पूरी जिन्दगी शिक्षा को समर्पित करने वाले विख्यात लेखक थानवी जी ने निधन के बाद देह भी शिक्षा के लिए सौंप दी। अक्टूबर 2016 में उन्होनें अपनी हस्तलिपि में शोक संदेश लिखकर परिजनों को सौंप दिया था। जिसमें निधन व शोक सभा की तारीख की जगह खाली छोड़ दी गई थी। इस शोक संदेश में उन्होनें देहदान करने का जिक्र भी किया था, साथ ही समाज में सुधार की दृष्टि से निधन पर उठावणा के बाद किसी भी प्रकार का क्रिया-कर्म नहीं करने की इच्छा व्यक्त की थी।

शिक्षा साधक थानवी जी ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर मृत्युपरांत उनका दाह संस्कार न करके देह का चिकित्सा एवं अनुसंधान में विद्यार्थियों को दान करने की परिजनों से चर्चा कर इच्छा जताई तथा देहदान के लिए उन्हें विश्वास में लिया। जिस पर जोधपुर के डॉ. संपूर्णानन्द मेडिकल कॉलेज में 23 दिसम्बर, 2016 को देहदान के लिए आवेदन किया गया था। निधन के बाद उनकी इच्छा अनुरूप उनके अनुज रमेश थानवी (लेखक एवं संपादक-अनौपचारिका), बड़े पुत्र ओम थानवी (जनसता के पूर्व संपादक एवं राजस्थान पत्रिका के सलाहकार संपादक), पुत्र जयप्रकाश थानवी (सहायक प्रशासनिक अधिकारी माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर), पुत्र मुरारीलाल थानवी (सामाजिक कार्यकर्ता एवं निदेशक, दूसरा दशक फलोदी) ने मेडिकल कॉलेज को सूचित कर दिया था। 23 अप्रैल, 2018 (विश्व पुस्तक दिवस) सुबह उनकी पार्थिव देह एम्बुलेंस में रखकर निवास मोची स्ट्रीट से राजकीय चिकित्सालय तक अन्तिम यात्रा निकाली गई। इस दौरान परिजनों सहित शहर के गणमान्य नागरिकों, साहित्यकारों, पत्रकारों व आमजनों ने नम आंखों से उन्हें अन्तिम विदाई दी, तथा गहरा दुःख व्यक्त करते हुए इसे शिक्षा एवं साहित्य जगत में अपूरणीय क्षति बताया। अन्तिम यात्रा के बाद पार्थिव देह को परिजनों द्वारा जोधपुर के डॉ. संपूर्णानन्द मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभाग को सुपुर्द कर दिया गया। फलोदी शहर में देहदान का यह पहला मामला है।

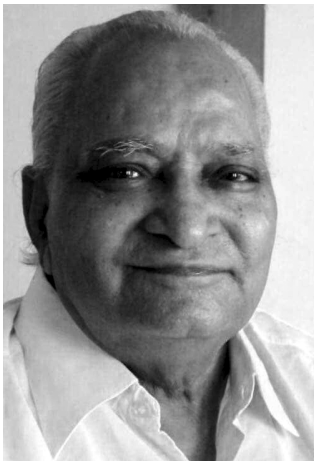

शिवरतन थानवी
(3-8-1930 से 22-4-2018)

शिवरतन जी थानवी के देहावसान के बाद देहदान करने पर बीबीसी हिन्दी सेवा लंदन के पूर्व उपप्रमुख शिवकांत ने फेसबुक पर अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए लिखा है कि- ''मृत्यु और उसके बाद की गति को लेकर कुछ ऐसी रहस्यात्मक धारणाएं बनी हुई हैं कि प्रगतिशील और वैज्ञानिक चिंतन रखने वाले लोग भी चिकित्सा अध्ययन और शोध के लिए देहदान करने का साहस नहीं जुटा पाते हैं। इसलिए भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर में चिकित्सा अध्ययन के लिए देहों का घोर अभाव बना हुआ है यशः शेष शिवरतन थानवी जी ने देहदान करके और स्वजनों और मित्रों को मरणोपरान्त किए जाने वाले शोकानुष्ठानों से परे रखकर वह मिसाल कायम की है जो आइन्स्टाइन और हॉकिंग जैसे वैज्ञानिक, ज्यां-पॉल सार्त्र और बर्ट्रेड रसल जैसे मौलिक विचारक और दयानंद सरस्वती और गांधी जी जैसे समाज सुधारक नहीं कर पाए। आयुध विकास के लिए अपनी हड्डियां दान कर देने वाले दधीचि के देश में देहदान का साहस आज भी विरले ही जुटा पाते हैं। डॉक्टरों से आज हम हर मर्ज का इलाज तो चाहते हैं लेकिन देहदान का सोच भी नहीं पाते जो कि देह के मर्म को समझने के लिए जरूरी है। थानवी जी ने राजस्थान के पारंपरिक समाज को ही नहीं, पूरे देश और विश्व को संदेश दिया है कि यदि सचमुच आने वाली पीढ़ियों को शिक्षित करना है तो हमें देहदान के लिए ही नहीं, अर्थहीन परंपराओं के परित्याग के लिए भी कटिबद्ध होना होगा।

साहित्यकार विष्णु नागर ने अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए लिखा है कि- ''उन्होनें जीवन में जो किया वह तो महत्वूपर्ण है। देहदान करना और अपनी मृत्यु के बाद कर्मकांड न करने की उनकी इच्छा ने उन्हें और बड़ा बना दिया।"

देश भर के पाठकों एवं लेखकों ने अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए थानवी जी के देहदान के निर्णय को इतिहास में एक और पाठ जुड़ने की बात कही।

निरन्तर आगे की सोच रखने वाले, नया सीखने, समझने और पढ़ने-पढ़ाने की अलख जगाने वाले सहृदय व्यक्तित्व के धनी शिवरतन थानवी द्वारा देहदान करके राजस्थान की मरु-भूमि में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में अपनी उम्दा सोच से नया अध्याय लिखा है।

शिक्षक और पुस्तक प्रेमी पिता भीखमचंद जी थानवी के घर पर उनका 3 अगस्त, 1930 को जन्म हुआ। पुस्तकों से उनका लगाव छुटपन से रहा। ''दूध बताशा'' पुस्तक से अपना साहित्य सफर शुरू करते हुए उन्होनें प्रेमचंद, बच्चन एवं मैथिलीशरण गुप्त को आनन्द पूर्वक पढ़ा। दसवीं करते ही राहुल सांकृत्यायन की प्रसिद्ध पुस्तक ''तुम्हारी क्षय'' पढ़ी तो उनके जीवन में बड़ा बदलाव आ गया। ब्राह्मण की निशानी लम्बी चोटी सिर में रहा करती थी, वह बराबर हो गई, यज्ञोपवीत (जनेऊ) भी उतार कर रख दिया। गीता-रामायण बार-बार पढ़ने की बजाय प्रगतिशील साहित्यकारों यशपाल, जूलियस फूचिक, कृशनचंदर और मैक्सिम गोर्की की पुस्तकों को दिन-रात पढ़ने में लगाया।

प्रखर विचारक व चिंतक थानवी जी ने साप्ताहिक ज्वाला, अमर ज्योति एवं राजस्थान पत्रिका में दैनिक स्तम्भ लिखे, बतौर पत्रकार अपनी पैनी कलम चलाई। गम्भीर पत्रकार की छवि आम लोगों में बनी। प्रख्यात साहित्यकार यशपाल जब जोधपुर आए और रांघेय राघव जयपुर आए तो उनका साक्षात्कार लेने में वे अव्वल रहे। पत्रिकाओं में जब साक्षात्कार छपा तो पाठकों ने खूब सराहा।

शिक्षक पद पर रहते उन्होंने दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में अध्यापन किया। बालकों के सहज सीखने, समझने के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया। सृजनात्मक कौशल को विकसित करने के लिए बालकों को हर अवसर पर उन्होनें प्रोत्साहित किया। संवादप्रिय, प्रकृति प्रेमी एवं संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थानवी जी को 1965 में शिक्षा विभाग राजस्थान की पत्रिका शिविरा का नामकरण करने एवं संस्थापक संपादक बनने का गौरव हासिल हुआ। शिक्षा में मौलिक लेखन एवं नवाचारों के लिए उन्होंने शिविरा के माध्यम से देश में कीर्तिमान स्थापित किया। लीक से हटकर काम करने के लिए वे विभाग में चिर-परिचित रहे। उनकी निर्भयता, ईमानदारी एवं कर्मठता की जड़ें दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ती रही। शिक्षकों के हितों के लिए उन्होंने अपनी प्रखर कलम से अनेक रचनात्मक कार्यों को अंजाम दिया। रचनाकार शिक्षक साथियों को मंच मिले, इस क्रम में साहित्य प्रेमी थानवी जी ने शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना को शुरू किया। इस योजना की तारीफ

दूर-दूर तक होने लगी। प्रसिद्ध साहित्यकारों से पुस्तकों का संपादन करवाया जाने लगा तथा नये शिक्षक रचनाकार भी सामने आने लगे।

पूरे देश में शिक्षा का साहित्य से नाता जोड़ने वालों में थानवी जी का नाम प्रमुख रूप से जाना जाता है।

अनूठे व्यक्तित्व के धनी, सच्चे शिक्षा प्रेमी एवं कुशल प्रशासक अनिल बोर्दिया जी की प्रेरणा से थानवी जी ने शिविरा पत्रिका का कार्य संभाला था। तत्कालीन शिक्षा निदेशक बोर्दिया जी ने हमेशा उनके कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना की। शिक्षा मनीषी गिजु भाई, दयालजी मास्साब से लेकर इवान इलिच, जोन होल्ट और पावलो फ्रेरे आदि प्रसिद्ध शिक्षाविदों के शैक्षिक विचारों पर गहन चर्चा का अभियान भी थानवी जी ने चलाया था। सरल, सहज, हंसमुख एवं कलाप्रिय व्यक्तित्व के धनी थानवी जी अपनी अद्‌भुत शैली एवं संकल्प के लिए आमजन में जाने जाते रहे हैं। समाज में बढ़ते अंधविश्वास एवं कुरीतियों के धुर विरोधी रहकर इनके गढ़ को तोड़ने के लिए उन्होंने वैज्ञानिक चेतना का विकास आमजन में हो इसके लिए शिक्षा को सर्वोपरि बताया। उनकी विशिष्ट कृतियों में ''आज की शिक्षा कल के सवाल'' पाठकों में खूब चर्चित रही है। ''कोबायाशी की कहानी'' ''तोड़ना बाधाओं का'' (अनुवाद) ''सामाजिक विवेक की शिक्षा'' ''भारत में सुकरात'' एवं ''शिक्षा सर्वोपरि'' पुस्तकें उनके गहन चिंतन व साधना का सुपरिणाम हैं। उनकी पुस्तकों की भाषा सरल व सहज है। यह आम अभिभावक व शिक्षक को जागरूक करने में महती भूमिका निभाने वाली अनूठी पुस्तकें हैं। इस वर्ष उनकी डायरी ''जग दर्शन का मेला'' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है। उनकी पुस्तकों में लीक से हटकर सोच का आयाम हरेक पाठक को नये चिंतन के लिए समग्र दृष्टि देता है।

''सामाजिक विवेक की शिक्षा'' पुस्तक की भूमिका में उन्होनें लिखा है- ''शिक्षा के बारे में हम जानते क्या हैं, हमें जानना क्या है और जानने के लिए हमनें किया क्या है? ऐसा किए बिना न तो शैक्षिक चेतना का अकाल दूर होगा और न हमारा शिक्षा के अधिकार वाला नया कानून सफल होगा।'' इस पुस्तक में पढ़ने की आदतों, शिक्षकों के कुशल अध्यापन और अभिभावकों की बालकों के प्रति सजगता के बारे में गहराई से विचार, चिंतन किया गया है। शिवरतन जी ने इस पुस्तक में ऐसे अनेक सवाल खड़े किए है जो हमें यथार्थ से रूबरू करवाते हैं। क्या जरूरत है बी. एड. की, कुंजियों और पासबुकों में बुराई क्या है, पुराना पड़ चुका इल्म, कोचिंग की जरूरत पर सवाल, शिक्षक दिवस कैसे मनाएं, शिक्षा बीमार क्यों है। इस तरह पुस्तक में समाहित ये लेख उनके साहस, बेबाक विचार एवं उच्च कोटि के मौलिक चिंतन से हमें न केवल साक्षात्कार करवाते है, बल्कि सोचने व समझने के लिए एक नई दृष्टि व दिशा का विकास करते है। इसी तरह अपनी पुस्तक ''भारत में सुकरात'' के प्राक्कथन में महत्वपूर्ण बात लिखी है कि- ''शिक्षक पढ़ें, माता-पिता भी पढ़ें, किन्तु केवल पाठ्यपुस्तकें या होमवर्क-क्लासवर्क की कापियां ही नहीं, कुछ शिक्षा संबंधी साहित्य भी पढ़ें और कुछ अन्य ज्ञानवर्धक पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएं भी पढ़ा करें। रुचि रखकर पढ़ें तो शिक्षा प्रणाली का सही विकास होगा।'' पढ़ने की आदतों का विकास करना और पुस्तकों की चर्चा करना उनके स्वभाव में रिलमिल गया था।

अद्‌भुत शिक्षक एवं अनन्य पुस्तक प्रेमी थानवी जी का मुझे चौदह वर्ष आत्मीय सानिध्य मिला। उनके सहृदय व्यक्तित्व ने मुझे भीतर तक प्रभावित किया। देश भर की शिक्षा एवं साहित्य की प्रमुख पत्रिकाएं पढ़ने के लिए दीं। अपनी पुस्तकें उपहार में दीं तथा पढ़ने-लिखने के लिए हर मुलाकात में प्रोत्साहन देते रहे। इस आपसी संवाद में शिक्षा, साहित्य एवं समाज से जुड़े प्रमुख संस्मरणों को सुनकर मुझे नई ऊर्जा मिलती। इन दिनों क्या पढ़ा, क्या लिखा, इस विषय पर चर्चा होती थी। इस तरह वे हर मिलने वाले पाठक या रिश्तेदार को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। रुचिवान पाठकों को पत्रिकाएं पढ़ने के लिए देते थे। वे हमेशा पत्र लिखने के लिए प्रेरित करते थे। एक कस्बे में रहते हुए हमारा पत्र व्यवहार भी खूब हुआ। मेरे लिए उनके पत्र विरासत की मानिंद हैं। इन पत्रों में प्रायः साहित्य क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन है, पत्र-पत्रिकाओं में छपे लेखों की चर्चा साथ ही वर्तमान समय व समाज पर गहरा चिंतन व्यक्त है। इसके अलावा वे आत्म-प्रचार के साधनों से दूर रहने की हिदायत देते थे। उन्होनें देश भर के पाठकों व लेखकों को पत्रों के माध्यम से ऐसे अनूठे रिश्ते की इबारत लिखी है जिसकी कल्पना अन्य साहित्यकारों से करना शायद नामुमकिन है। वे हमेशा कहते जो भी लिखो उसे ''लाल खम्भे'' यानि लेटर बॉक्स के हवाले कर दो। आज सोशल मीडिया के जमाने में चिट्ठी-पत्री व्यवहार पर अकाल-सी छाया मंडरा रही है। साहित्य की प्राथमिक विधा चिट्ठी व डायरी लेखन पर वर्तमान समय में पाठकों की अरुचि को देखकर वे प्रायः चिंतित होते थे।

उनके पुत्र, वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक ओम थानवी ने लिखा है कि- ''पठन-पाठन की बात करने वाले आखिरी दस्ते में पिताजी का नाम शायद अहम होगा।''

शिवरतन जी थानवी की अपनी भाषा में पुस्तकों को थोड़ा टटोलना यानि स्वाद चखना, पूरी पढ़ना यानि तृप्त होना। इस तरह अपनी अलहदा शैली से हर मिलने वाले शख्स को अपनी ओर आकर्षित कर देते थे। अपनी धुन में रमने वाले उद्‌भट विद्धान को सदैव खोज-खोजकर पुस्तकें पढ़ने का चाव बना रहा। ऋषि तुल्य जीवन व्यतीत करने वाले थानवी जी को हमेशा नया सीखने की धुन सवार रही। जिज्ञासुवृत्ति उनके रोम-रोम में बसी हुई थी। संगीत की आनन्दमयी दुनिया में वे अक्सर लीन रहते थे। स्वरों को प्रसाद की तरह ग्रहण करते थे। गीत-संगीत की जुगलबंदी में सीखने का अदम्य भाव उन्हें हमेशा तरो-ताजा रखता था। दोनों आंखों की रोशनी जाने लगी थी कि दोनों आंखों के दो नए लैंस लग गए और वे पुस्तकों को सीने से लगाकर बैठ गए। ऐसा तप बिरला शिक्षक ही कर सकता है। आज के समय में ऐसे समर्थ पाठक, अंवेषी एवं गुणग्राही शिक्षक ढूंढने से शायद ही मिले! उनके भीतर विराट मनुष्य का वास था। मानवीय मूल्य बोध को अपने जीवन में आत्मसात करने वाले विरले शिक्षक थानवी जी शिक्षा को धर्म एवं जाति को जिज्ञासा से जोड़ने के हिमायती बने रहे।

उन्होंने बी. ए. में हिन्दी साहित्य और एम. ए. में अंग्रेजी साहित्य पढ़ा। वे विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता थे। हर मिलने वाले शिक्षक व पाठक को नई भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करते थे। शिक्षा व साहित्य लेखन के दौरान उन्होंने राजस्थानी, बांग्ला, गुजराती और अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद भी किए। कवि पीटर बोल्टा की पंक्तियां हैं- ''जब तक तुम सांस लेना बन्द नहीं कर देते, हर सांस एक युद्ध है।'' योद्धा शिक्षक शिवरतन जी थानवी अपने अंतिम समय तक पुस्तकों को गले से लगाए रहे। अस्वस्थता के बावजूद वे सोते-सोते पढ़ते थे। राजस्थानी भाषा में अपने लहजे में वे कहते थे- बांच-बांच नै फेर बांचू यानि जो पहले पढ़ा है, उन्हें फिर-फिर पढ़ना है। कहीं पढ़ने से कुछ छूट तो नहीं गया। इस पर वे खूब मनन करते थे। उनकी पढ़ने की सक्रियता दिलचस्प थी। वैज्ञानिक चेतना से मानवीय जीवन को हर संभव सफल बनाने की कोशिश में लगे रहे थानवी जी स्वयं बड़ी पुस्तक थे। हरेक काम को अपने हाथ से करना, डायरी में नोट करना उनके जीवन का प्रमुख हिस्सा बना रहा। उनकी स्मृति गजब की थी।

विख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टाइन के शब्दों में- ''जीवन साईकिल की सवारी करने जैसा है, आपको संतुलन बनाए रखने के लिए आगे बढ़ना होगा।'' मरुस्थल में खिले मनभावन पुष्प थानवी जी शिक्षा, साहित्य एवं संगीत को जीवन में आत्मसात करके बेहतरीन संतुलन बनाकर तमाम आत्म प्रशंसा के नारों को दरकिनार करते हुए आगे बढ़ते रहे।... प्रायः हर मुलाकात के बाद वे मुझे कहते- फेर आवजौ...। उनका सहज सामीप्य, अद्‌भुत स्नेह एवं विरल व्यवहार पाकर हर कोई खिल उठे जैसे-रेगिस्तान में नखलिस्तान...।

अपने जीवनकाल में शिक्षा में नव-चिन्तन एवं पठन-लेखन की जागृति का गांव, ढाणी एवं कस्बों में प्रचार करने वाले महा मनीषी थानवी जी ने निधन उपरांत विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए देहदान की अपूर्व यात्रा करके समाज में मिसाल पेश की है। उनके देहावसान के बाद देहदान का समर्पण एवं उठावणा के बाद किसी तरह का क्रियाकर्म नहीं करने का भगीरथी निर्णय समाज के हर तबके में नई जागृति पैदा करता है। हमें पूरा विश्वास है, उनकी प्रगतिशील सोच से समाज के ढांचे में जरूर बदलाव आयेगा। प्रेरणा पुरुष शिक्षक पं. शिवबालकराम जी के अपराजेय शिष्य थानवी जी को मेरा सलाम।

ऐसे स्वाध्यायी मन के इंसान का जाना एक युग का अवसान है। शिक्षा साधक, अनूठे पुस्तक प्रेमी एवं प्रख्यात विचारक एवं लेखक शिवरतन जी थानवी को विनम्र श्रद्धांजलि।

लेखक परिचय : दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में 20 सालों से अध्यापन कार्य। प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में कविता एवं लेख प्रकाशित। वर्तमान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लोर्डियां (फलोदी, जोधपुर) में वरिष्ठ अध्यापक। ◆

संपर्क : 9413966175; spjeengar2013@gmail.com